

Padma Shri



PROF. R. L. KASHYAP

Prof. R.L. Kashyap is Professor Emeritus of Electrical and Computer Engineering, at Purdue University, USA and the Honorary Director of the Sri Aurobindo Kapali Sastry Institute of Vedic Culture (SAKSHI). He has made fundamental contributions both in the field of Computer Pattern Recognition and Machine Intelligence, as well as in the field of Vedic Studies.

2. Born on 28th March, 1938, Prof. Kashyap received his early education in the National College, Bangalore, Central College, the Indian Institute of Science with the degrees of ME and DIISc. He received his Ph.D. from Harvard University in 1966, where he was a Gordan McKay Prize Fellow. During his 33 years term at Purdue University, he has guided 50 students for the Ph.D. degree.

3. Prof. Kashyap has made fundamental contributions in the field of Vedic Studies,, including the complete translation into English all the four major and most ancient collection of verses in Sanskrit namely the Rig Veda Samhita, the Krishna Yajurveda Samhita, the Shukla Yajurveda Samhita, the Sama Veda, and the Atharva Veda, consisting together of about 25000 metrical verses in Vedic Sanskrit which differs from classical Sanskrit. He has continued the work of Sri Aurobindo and Sri Kapali Sastry in revealing the deeper meanings of Veda mantra's. The translation has received deep praise from several well-known authorities of the Vedas.

4. Prof. Kashyap has written, in English, about 50 compact expository books explaining the secrets of the Veda suktas. Most of them are translated into various Indian languages. Under his direction, his major works are getting translated into Indian languages such as Kannada, Tamil, Telugu, Malayalam, Hindi and Marathi. Now the entire Kannada translation of Rig Veda, Krishna Yajur Veda and Atharva Veda is available. He has published more than 250 research papers in advanced scientific Journals and has delivered more than 200 papers at the National and International conference; including several keynote speeches. He was also the Associate Director for the Centre for Intelligent Manufacturing. He still holds regular, weekly classes at SAKSHI explaining the deeper meaning of the Veda mantra-s. He has continued writing books articles on the Vedas. His doctoral work 'Ho-Kashyap Algorithms' done in 1965 is quoted even in today's textbooks.

5. Prof. Kashyap has bagged several awards and honours including distinguished Alumnus Award' by IISc in 2010; "Rajyotsava Award" in 2012 by the Government of Karnataka; "Vishveshwaraya Vijnana Puraskara" in 2013 by the "Swadeshi Science Movement"; "Veda Brahma" Award in 2013 by the Bharatiya Vidya Bhavan, Bangalore; title of "Vedanga Vidvan" instituted by an Institution of the Government of India; "Maharshi Sandeepani Veda Vidya Pathashala" for his work in the Vedic studies. He also received several best research paper awards such as the J.C. Bose Award (1991), Best Paper Award of the National Electronics Conference (1966), the second Best Paper Award in the journal, 'Pattern Recognition'. For his work in the field of Machine Intelligence, he has received King-Sun Fu Award for fundamental contributions to Pattern Recognition (1990), given by the International Association of Pattern Recognition.



प्रो. आर. एल. कश्यप

प्रो. आर. एल. कश्यप अमेरिका के पडर्यू विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल एंड कंप्यूटर इंजीनियरिंग के प्रोफेसर एमेरिटस और श्री अरबिंदो कपाली शास्त्री वैदिक संस्कृति संस्थान (एस.ए.के.एस.एच.आई) के मानद निदेशक हैं। उन्होंने कंप्यूटर पैटर्न रिकग्निशन और मशीन इंटेलिजेंस के साथ-साथ वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में भी मौलिक योगदान दिया है।

2. 28 मार्च, 1938 को जन्मे प्रो. कश्यप ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा नेशनल कॉलेज, बेंगलोर, और एम.ई. और डीआईआईएससी की डिग्रीयां इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस से प्राप्त कीं। उन्होंने 1966 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पीएच.डी. की, जहां वह गोर्डन मैके प्राइज फेलो थे। पडर्यू यूनिवर्सिटी में अपने 33 वर्ष के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने पीएच.डी. की डिग्री के लिए 50 छात्रों का मार्गदर्शन किया है।

3. प्रो. कश्यप ने वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में मौलिक योगदान दिया है, जिसमें संस्कृत के सभी चार प्रमुख और सबसे पुरातन श्लोक संग्रह ऋग्वेद संहिता, कृष्ण यजुर्वेद संहिता, शुक्ल यजुर्वेद संहिता, सामवेद और अथर्ववेद शामिल हैं। इनमें वैदिक संस्कृत में लगभग 25000 छंदबद्ध श्लोक हैं जो क्लासिकल संस्कृत से भिन्न हैं। उन्होंने वेद मंत्रों के गहरे अर्थ को स्पष्ट करने में, श्री अरबिंदो और श्री कपाली शास्त्री का कार्य जारी रखा है। इस अनुवाद कार्य को वेदों के कई जाने-माने विद्वानों की भरपूर प्रशंसा मिली है।

4. प्रो. कश्यप ने अंग्रेजी में वेद सूक्तों के रहस्यों को उजागर करते हुए करीब 50 कॉम्पैक्ट एक्सपोजिटरी पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से अधिकांश का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके निर्देशन में उनकी प्रमुख कृतियों का कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, हिंदी और मराठी जैसी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। अब ऋग्वेद, कृष्ण यजुर्वेद और अथर्ववेद का संपूर्ण कन्नड़ अनुवाद उपलब्ध है। उन्होंने उच्च स्तरीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में 250 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित किए हैं और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 200 से अधिक शोधपत्र पढ़े हैं; जिनमें कई महत्वपूर्ण व्याख्यान भी शामिल हैं। वह सेंटर फॉर इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग के एसोसिएट डायरेक्टर भी रहे हैं। वह अभी भी साक्षी (एस.ए.के.एस.एच.आई) में नियमित रूप से साप्ताहिक कक्षाएं आयोजित करते हैं जिनमें वेद मंत्रों के गहरे अर्थों की व्याख्या की जाती है। वह वेदों पर पुस्तकीय लेख लिखते रहते हैं। 1965 में किए गए उनके डॉक्टरेट कार्य 'हो-कश्यप एल्गोरिद्म' का उल्लेख अब भी वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है।

5. प्रो. कश्यप को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2010 में आईआईएससी द्वारा प्रतिष्ठित एल्युमनस अवार्ड; कर्नाटक सरकार द्वारा 2012 में "राज्योत्सव पुरस्कार"; "स्वदेशी विज्ञान आंदोलन" द्वारा 2013 में "विश्वेश्वरैया विज्ञान पुरस्कार"; भारतीय विद्या भवन, बेंगलोर द्वारा 2013 में "वेद ब्रह्म" पुरस्कार; भारत सरकार के एक संस्थान द्वारा आरम्भ की गई "वेदगंगा विद्वान" की उपाधि; वैदिक अध्ययन में उनके कार्य के लिए "महर्षि संदीपनी वेद विद्या पाठशाला" शामिल हैं। उन्हें जे.सी. बोस पुरस्कार (1991), नेशनल इलेक्ट्रॉनिक्स कांफ्रेंस का सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार (1966), जर्नल 'पैटर्न रिकग्निशन' में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार जैसे कई सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार भी प्रदान किए गए हैं। मशीन इंटेलिजेंस के क्षेत्र में उनके कार्य के लिए, उन्हें पैटर्न रिकग्निशन में मौलिक योगदान के लिए इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ पैटर्न रिकग्निशन द्वारा किंग-सुन फू पुरस्कार भी प्रदान किया गया है।